6. मैथिलीशरण गुप्त

कवि परिचय

भारत की स्वाधीनता के लिए संघर्ष करने का आह्वान करने एवं भारतीय संस्कृति की तात्विक विशेषताओं को अपने प्रबंध–काव्यों के माध्यम से व्याख्या करने के कारण मैथिलीशरण गुप्त 'राष्ट्रकवि' के रूप में जाने–माने गए हैं। आपका जन्म 1886 ई० में चिरगँव, जिला झाँसी (उत्तर प्रदेश) में हुआ। आपकी शिक्षा घर पर ही हुई, परन्तु काव्य–दीक्षा 'सरस्वती' के स्वनामधन्य संपादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के द्वारा प्राप्त हुई। आपके 'भारत–भारती' नामक काव्य को अतीव लोकप्रियता प्राप्त हुई और भारत के राष्ट्रीय जागरण में इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा। आपकी सभी कविताओं में राष्ट्रीयता और सांस्कृतिकता का उन्मेष दिखाई पड़ता है। 'साकेत' आपका श्रेष्ठ काव्य है, जिसमें राम के पावन चरित्र को आधुनिक परिवेश में उपस्थित करने के साथ ही उपेक्षिता उर्मिला के आँसू पोंछने का प्रयास भी किया गया है।

मैथिलीशरण गुप्त सरल–निश्छल स्वभाव के आदर्श पुरुष थे, जो संपूर्ण हिंदी जगत् में 'दद्दा' के नाम से विख्यात थे। बीसवीं शताब्दी के हिंदी कवियों की कई पीढ़ियों को आपकी कविता ने भाव और भाषा की दृष्टि से प्रभावित किया है। राष्ट्रीय आंदोलन के सभी स्वरों को आपने अपने काव्य के द्वारा मुखरित किया है। आपको उत्तरी भारत के सांस्कृतिक नव–जागरण का प्रतिनिधि कवि कहा जा सकता है। आपने प्रबंध–काव्य भी लिखे हैं और मुक्तक कविताओं की भी रचना की है। आपके खण्डकाव्य विशेष लोकप्रिय हुए हैं।

पाठ परिचय

प्रस्तुत पाठ में आए पद्य 'भारत–भारती' से उद्धृत हैं। इस पाठ में गुप्त ने भारतीय प्राचीन परंपराओं का चित्रण किया है। गुप्त जी ने भारत भूमि को ब्राह्मी स्वरूपा और ज्ञान विज्ञान का केंद्र बताया है। भारत भूमि धन–धान्य से पूर्ण है एवं समस्त प्राणियों का पालन–पोषण करने वाली है। कवि ने भारत भूमि के आज बदलते स्वरूप पर भी चिंता व्यक्त की है। भवन की विशेषता बताते हुए कहा कि यहाँ के मंदिर बहुत ऊँचे थे और उन पर लगी ध्वजा आकाश तक फहराया करती थी। यहाँ का जल भी अमृत के समान है। यहाँ के पानी को पीकर आलस्य का नाश हो जाता है तथा बल और विक्रम प्राप्त होता है। यहाँ की प्रातःवेला हमें कर्मरत होने की प्रेरणा देती है। स्नान के पश्चात यहाँ दान का भी अत्यधिक महत्व है। प्राचीन भारत में दान करने वाले अधिक थे किंतु दान प्राप्त करने वालों की संख्या बहुत ही कम थी। भारत में गाय को माता माना गया है। गाय का दूध अमृत के समान होता है। जिस घर में गाय होती है वहाँ शक्ति का भंडार होता है। यहाँ के राजा–रंक, नर–नारी नित्य मंदिरों में जाते हैं और ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त कर दृढ़ता से कर्त्तव्य पालन करते हैं। भारत में अतिथि को भगवान माना गया है। अतिथियों के आगमन से हमारे घर पवित्र हो जाते हैं। यहाँ पुरुष सदाशय हैं, उनका यश संसार में फैला रहता है, मुख पर कांति रहती है तथा वे देवताओं के समान सुशोभित होते हैं। स्त्रियाँ भी कम नहीं हैं। वे निरंतर कार्य में लगी रहती हैं। उनमें आलस्य, प्रमाद नाममात्र का भी नहीं है। साथ ही वे धीरता, सांत्वना की प्रतिमूर्ति हैं तथा शुभ करने वाली हैं।

भारत भूमि

ब्राह्मी–स्वरूपा, जन्मदात्री, ज्ञान–गौरव–शालिनी,
प्रत्यक्ष लक्ष्मीरूपिणी, धन–धान्यपूर्णा, पालिनी,
दुर्द्धर्ष रुद्राणी स्वरूपा शत्रु–सृष्टि–लयंकरी,
वह भूमि भारतवर्ष की है भूरि भावों से भरी।।1।।

वे ही नगर, वन, शैल, नदियाँ जो कि पहले थीं यहाँ –
हैं आज भी, पर आज वैसी जान पड़ती हैं कहाँ ?
कारण कदाचित् है यही–बदले स्वयं हम आज हैं,
अनुरूप ही अपनी दशा के दीखते सब साज हैं।।2।।

भवन

चित्रित घनों से होड़ कर जो व्योम में फहरा रहे–
वे केतु उन्नत मन्दिरों के किस तरह लहरा रहे ?
इन मन्दिरों में से अधिक अब भूमितल में दब गये,
अवशिष्ट ऐसे दीखते हैं अब गये या तब गये।।3।।

जलवायु

पीयूष–सम, पीकर जिसे होता प्रसन्न शरीर है,
आलस्य–नाशक, बल–विकासक उस समय का नीर है।
है आज भी वह, किन्तु अब पड़ता न पूर्व प्रभाव है,
यह कौन जाने नीर बदला या शरीर–स्वभाव है ?।।4।।

प्रभात

क्या ही पुनीत प्रभात है, कैसी चमकती है मही;
अनुरागिणी ऊषा सभी को कर्म में रत कर रही।
यद्यपि जगाती है हमें भी देर तक प्रतिदिन वही,
पर हम अविध निद्रा–निकट सुनते कहाँ उसकी कहीं ?।।5।।

दान

सुस्नान के पीछे यथाक्रम दान की बारी हुई,
सर्वस्व तक के त्याग की सानन्द तैयारी हुई।
दानी बहुत हैं किन्तु याचक अल्प हैं उस काल में,
ऐसा नहीं जैसी कि अब प्रतिकूलता है हाल में।।6।।

गो–पालन

जो अन्य धात्री के सदृश सबको पिलाती दुग्ध हैं,
(है जो अमृत इस लोक का, जिस पर अमर भी मुग्ध हैं।)

वे धेनुएँ प्रत्येक गृह में हैं दुही जाने लगी–
यो शक्ति की नदियाँ वहाँ सर्वत्र लहराने लगीं।।7।।
घृत आदि के आधिक्य से बल–वीर्य का सु–विकास है,
क्या आजकल का–सा कहीं भी व्याधियों का वास है ?
है उस समय गो–वंश पलता, इस समय मरता वही।
क्या एक हो सकती कभी यह और वह भारत मही ?।।8।।

होमाग्नि

निर्मल पवन जिसकी शिखा को तनिक चंचल कर उठी–
होमाग्नि जलकर द्विज–गृहों में पुण्य परिमल भर उठी।
प्राची दिशा के साथ भारत–भूमि जगमग जग उठी,
आलस्य में उत्साह की–सी आग देखो, लग उठी।।9।।

देवालय

नर–नारियों का मन्दिरों में आगमन होने लगा,
दर्शन, श्रवण, कीर्त्तन, मनन से मग्न मन होने लगा।
ले ईश–चरणामृत मुदित राजा–प्रजा अति चाव से–
कर्त्तव्य दृढ़ता की विनय करने लगे समभाव से।।10।।

अतिथि–सत्कार

अपने अतिथियों से वचन जाकर गृहस्थों ने कहे –
''सम्मान्य! आप यहाँ निशा में कुशलपूर्वक तो रहे।
हमसे हुई हो चूक जो कृपया क्षमा कर दीजिए –
अनुचित न हो तो, आज भी यह गेह पावन कीजिए।।11।।

पुरुष

पुरुष–प्रवर उस काल के कैसे सदाशय हैं अहा!
संसार को उनका सुयश कैसा समुज्ज्वल कर रहा!
तन में अलौकिक कान्ति है, मन में महा सुख–शान्ति है,
देखो न, उनको देखकर होती सुरों की भ्रान्ति है! ।।12।।

स्त्रियाँ

आलस्य में अवकाश को वे व्यर्थ ही खोती नहीं,
दिन क्या, निशा में भी कभी पति से प्रथम सोती नहीं,
सीना, पिरोना, चित्रकारी जानती हैं वे सभी –
संगीत भी, पर गीत गन्दे वे नहीं गातीं कभी।।13।।
संसार–यात्रा में स्वपति की वे अटल अश्रान्ति हैं,
हैं दुःख में वे धीरता, सुख में सदा वे शान्ति हैं।

शुभ सान्त्वना है शोक में वे, और ओषधि रोग में,
संयोग में सम्पत्ति हैं, बस हैं विपत्ति वियोग में।।14।।

शब्दार्थ

जन्मदात्री–जन्म देने वाली/ लक्ष्मीरूपिणी–धन की देवी लक्ष्मी का रूप/शैल–पर्वत/ अवशिष्ट–बचे हुए अवशेष/व्योम–आकाश/पीयूष–अमृत/अनुरागिणी–प्रेम से परिपूर्ण/ निद्रा–नीद/ सर्वस्व–सब कुछ/ धात्री–धाय माँ/ धेनुएँ–गाएँ/ घृत–घी/ व्याधियों – बीमारियों/ शिखा–चोटी/द्विज–ब्राह्मण/ ईश–ईश्वर/ गेह–घर/ प्रवर–श्रेष्ठ/ चित्रकारी–चित्रकला/अश्रान्ति–विश्राम रहित / स्वपति–अपने पति/

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भारतवर्ष की भूमि किससे भरी हुई है ?

   (क) घृत से (ख) भावों से ( )

   (ग) पर्वतों से (घ) नदियों से

2. यहाँ का जल कैसा है ?

   (क) अमृत के समान (ख) गरल के समान

   (ग) गर्म (घ) खारा ( )

   उत्तरमाला – (1) ख (2) क

अति लघूत्तरात्मक

1. 'ज्ञान–गौरव–शालिनी' किसके लिए कहा गया है ?
2. यहाँ की जलवायु कैसी है ?
3. जल पीकर कौन प्रसन्न होता है ?
4. दान करने की बारी कब आती है ?
5. इस लोक का अमृत क्या है ?
6. पत्नी संयोग में क्या होती है ?

लघूत्तरात्मक

1. प्राचीन समय का नीर किस प्रकार का था ?
2. घृत के आधिक्य से किसका विकास होता है ?
3. यहाँ की प्रभात वेला किस प्रकार की है ?
4. नर–नारी देवालयों में क्या करते हैं ?
5. यहाँ के पुरुष कैसे हैं ?

निबंधात्मक

1. भारत भूमि की विशेषताएँ पाठ में आए पद्धांशों के आधार पर बताइए।
2. गो–पालन के महत्व को पाठ में आए पद्धाशों के आधार पर समझाइए।
3. यहाँ के पुरुषों की विशेषताएँ बताइए।
4. निम्नलिखित पद्धाशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

   (क) अपने अतिथियों से..............................पावन कीजिए।

(ख) सुस्नान के पीछे ....है हाल में।

(ग) संसार–यात्रा में..विपत्ति वियोग में।

•••

यह भी जानें

हल् चिह्न युक्त वर्ण से बनने वाले संयुक्ताक्षर के द्वितीय व्यंजन के साथ 'इ' की मात्रा का प्रयोग संबंधित व्यंजन के तत्काल पूर्व ही किया जाएगा, न कि पूरे युग्म से पूर्व। जैसे – कुट्टिम, चिट्ठियाँ, द्वितीय, बुद्धिमान, चिह्नित आदि (कुट्टिम, चिट्ठियाँ, द्वितीय, बुद्धिमान, चिह्नित नहीं।)

टिप्पणी – संस्कृत भाषा के मूल श्लोकों को उद्धृत करते समय संयुक्ताक्षर पुरानी शैली से भी लिखे जा सकेंगे। जैसे – संयुक्त, चिह्न, विद्या, चञ्चल, विद्वान, वृद्ध, द्वितीय, बुद्धि आदि। किंतु यदि इन्हें भी उपर्युक्त नियमों के अनुसार ही लिखा जाए तो कोई आपत्ति नहीं होगी।

•••